

मकुन्दसुख

शुभमिहधन

उत्तमः श्रीवक्रसुखाय ॥ यंत्रकायाय विधि ॥ कृपाधपना ॥ कलन यिताय
महाकात्र सग्वन गंगरास कृष्णकन सिन्धुमूढ मरा यंत्रसालि नक्षत्रलि
नक्रासाधन वयूका पुका मूढाण रावस्थान मयूर रुद्रिवात्र हासि
नकित्रिपूले मूढवात्र मूत्रवलि कलसगनय मिथिलस पित्तामृता यंत्र
गय यंत्रक यंत्रपत्रं पित्तामृति यंत्ररुद्रि यंत्रसूत्रका मूढवात्र ध
मिथापना ॥ वासवेन्द्र मध्यास यंत्रका मूढस द्धन ॥ मकुलवात्र रु
यूवाकन मधुदायक ॥ मध्यास ॥ य. रुद्र । पूर्वस ॥ सा. वक्र । दक्षिणस ॥

167-
Paucoralese
velli

334 | I

।म.त्रत्त।यन्त्रिमस॥म.यम॥उरुत्रस।गी.विश्ववकु॥विदिगस.घ
टविद्व.यकु४॥॥धनत्रिमधुलसवीहि.धननअयक॥॥आदि
ग्या।वीहि.स्नानवा.ग्रहपति.मावासा.स्नान.ऊऊम.यताप.आरु॥धनु
सिऊन.वलिरुकि.कीनजा॥१॥सामया।वीहि.शयूहास.ग्रहपति.सीरव.
स्नान.ऊऊम.यताप.शायू.।धनुसीरव।वलिरुकि.दधि॥२॥श्रीमत्रया।
वीहि.युका.ग्रहपति.धसा.स्नान.ऊऊम.यताप.आरु.।धनु.यु३।व
लिरुकि.मास.वा.दा.वाकू॥३॥वृषया।वीहि.नयूका.ग्रहपति.लं.

स्नान.ऊऊम.यताप.नयू.।धनु.लं।रुकि.घृत.मूग॥७॥वृहस्पतिया।
वीहि.गङ्गा.ग्रहपति।लं.स्नान.ऊऊम.यताप.नयू.।धनु.लं।रुकि.
कीनरुक॥८॥शुक्रया।वीहि.कठगुठ.ग्रहपति.सीरव.स्नान.ऊऊम.य
ताप.शायू.।धनु.आरु।रुकि.पूयककीनम्बा॥९॥गनिधनया।वीहि.
मास.ग्रहपति.कठगुठिसा.स्नान.ऊऊम.यताप.वाकू.।धनु.श।रुकि.
मास.पिसनम्बा॥१०॥वाश्या।वीहि.म्बात.ग्रहपति.रवन्.स्नान.ऊऊ
म.यताप.वाकू.।धनु.मन्त्र।रुकि.गिलक.वजावा॥११॥कश्या।वीहि.

कोत्रथ. यदुपति. यात्रस. खान. ऊऊम. यताप. नानावनी। धातु. सिऊन
रुकि. कीवदधिरुका ॥ २ ॥ ऊऊमया। वीहि. भूऊग. यदुपति. याता. स्वा
न. ऊऊम. यताप. नायू। धातु. रुतक। वलिरुकि. कीवदधि ॥ १० ॥
थन. नवमा रुका थापना ॥ ॥ थन ऊऊमानसूयोद्य ॥ थनलि आचार्य पुम
रवत. आसप्तघदित्रायकाव. विष्णाय। पूजा श्रीगुलिलवकावक ॥ थनयैव
गव्य। धन। कायवियऊमान ॥ थन. ऊऊमानपूजारुठिकापयक ॥ ॥
थनलिर्व. गुग्गुमधुल. दगुनि. कलन. त्याग. यिनाय. महाकाव. सग्वन.

ग्यगत्राध. मन. थतियूजायाय ॥ ॥ २०२ ॥ ॥ थनमधुलयूजा ॥ धया ॥
नलाऊन ॥ मधुलसूखलषनहाय ॥ मनु ॥ उं व ऊयऊऊ ॥ वऊनथिसक ॥
मनु ॥ उं ऊं रवसू लऊ ॥ उं मधधिवडिरुववऊवधऊ ॥ थनडाप ॥ आकष
ध ॥ स्वातवायमधुलन ॥ उं मधधिवडिनीमहीपुनीसत्रऊ ॥ २ रुदू २ स्वाहा
॥ मधस ॥ उं अमृक. वलवत्र २ पुवलेविनुऊऊ ॥ २ रुदू २ स्वाहा ॥ पूर्वस ॥ उं
अमृकअमृकविलाकिधि. गर्हसू वऊदी आकषय २ ऊ ॥ २ रुदू २ स्वाहा ॥
॥ दक्षिणस ॥ उं विमल. विपूलऊयवल. अमृकवित्रऊऊ ॥ २ रुदू २ स्वाहा ॥

हा ॥ दक्षिण ॥ अनूरागामहात्म्यं ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ पूर्वाशुक्लमाषाढ
 अरुविष्टवतस्तथा ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ पश्चिमद्वारिकास्तुतिश्च ॥ वज्रयूष
 युक्तिस्तथा ॥ पश्चिम ॥ धनिष्ठाशतारिषावेव ॥ उरुकादपदेस्तथा ॥ श्रवणीश्वि
 तीत्येवरुद्रधीसफमी ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ उरुकादपदेस्तथा ॥ पश्चिमद्वारिकास्तुतिश्च ॥ वज्रयूष
 युक्तिस्तथा ॥ उरुका ॥ यथापदाव्यूहस्तुति ॥ सर्वेतामामहाविद्या सर्व
 इत्यविनासका ॥ अकिमूकियदास्तीच ॥ रुसमूहानमाम्यर्ह ॥ ॥ धन
 वरुमाहात्म्यं ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्ष ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥

यस्तथा ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥
 धनवर्धनमहावीर्यपीठवर्धनमहाकूल ॥ गीतविद्यामहाकार्त्तिकगन्धर्वघन
 माम्यर्ह ॥ विवर्धनमहावीर्यसर्वप्रागवर्धन ॥ वक्रवर्धनमहाकूटनागना
 कूटनमाम्यर्ह ॥ विवर्धनमहावीर्यसर्वप्रागवर्धन ॥ वक्रवर्धनमहाकूट
 नागनाकूटनमाम्यर्ह ॥ कूटलंघीमहानाथ ॥ सर्वप्रागवर्धनयुद्ध ॥ यक्षनाकम
 हावीर्यनाकनाकनमाम्यर्ह ॥ ॥ धन ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥
 अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥ अक्षमूलास्तुतिश्च ॥

हा ॥ ॐ भूग्नय स्वाहा ॥ ॐ नमः स्वाहा ॥ ॐ वायुवग्नय स्वाहा ॥ ॐ ऋषीः
 मनाय स्वाहा ॥ यथा ॥ पूजा मुक्ति ॥ ॐ दद्यामहा राजा लोकपात्रामहद्वि
 का ॥ मूढदिगस्त्रिणावीना लोकपात्रितमामह ॥ ॥ धनमनुमालायायाव
 रक्षा मूषिष्ठान ॥ अथ १०८ ॥ ॥ दानवका मूषिष्ठान ॥ अथ १०८ ॥ ॥
 अथ मोगमथानपुत्रिष्ठा ॥ ॥ जातक मूषिष्ठान ॥ अथ १०८ ॥ ॥
 नाहमककायक ॥ सनावपा १०८ ॥ ॥ अथिनायक ॥ अथ १०८ ॥ ॥
 पात्र १०८ ॥ मास स्वाहा ॥ वा ॥ दा ॥ अथ १०८ ॥ ॥ अथ १०८ ॥ ॥
 स्वाहा ॥ अथ १०८ ॥ ॥

व. स्वस्ति वाकन ॥ गमथ ॥ सर्वो विष्णो यमार्थः सर्वो यदवमावर्त ॥ यद
 दास्यमूर्ध्ववधनि कूर्चकु सर्वदा ॥ अहमा नस्य आदिन्यादिगुहपीनाम
 न्मर्थः आयु कामनार्थः अमनि कूर्चकु स्वाहा ॥ ॐ वक्रकठक ॥ पूजा मुक्ति ॥
 अथ लिखित विधानार्थः कूर्चकु विलिखिय ॥ ॐ नमो वक्रकठक ॥ अथ १०८ ॥ ॥
 अथ लिखित ॥ विधानार्थः ॥ अहमा नस्य ॥ अथ १०८ ॥ ॥ अथ १०८ ॥ ॥
 यद ॥ अथ १०८ ॥ ॥ अथ १०८ ॥ ॥ अथ १०८ ॥ ॥ अथ १०८ ॥ ॥
 यमसूरुल अमसूरुल जीवत वम ॥ समय १०८ ॥ ॥ अथ १०८ ॥ ॥

शुभेवका रुविष्णामिवाधिविक्तनयनतः कथं गतं कृत्वा त्वं किं ममाद्यस्या नः
संशय ॥ अथ भद्रं दिवसा क्रयं कृत्वा भद्रं विदुः कुरु मः सन्निपाता रुवयः सर्ववृद्धिं
मनुष्य ॥ स्वां नतक ॥ स्वां नतक नतक ॥ धूय याय ॥ माथ ॥ रुगवपश्च वृद्धा
दती ॥ अदिन्यादिन वयं मधुल विद्या वाङ्मनमा मुक्त ॥ ॐ क्वा म्यहं महानाथ
मधुल कनू धात्मका । शिष्यानामनू कपार्थः यस्मा कं यूननाय व । तत्त रुगवत
स्य रुगवत पुष्पदं कुरु महेसि । समन्ता रु वरुमा वृद्धा उगव क क्रिया कुरु
दा । वाधिसंलाय क विरु वड वरुषा हं नू मूक ना माचार्य न वरु यिष्णामि

मधुल । अया ना सर्ववृद्धायाः सिद्धिभती पुदास्य (यति) ॥ ॥ ॐ नमो
व नकोय ॥ नमान वयं रुहः ॥ समन्ता रु वरुमा ॥ सूर्यः ॥ स्वादिसूरवदाः
यदा ॥ ऊऊ मानस्यानू कपायः ॥ अग कुरु यरु मधुल ॥ ऊऊ मानस्ये स्वां नत
नक ॥ ॥ थनलिव विधानस्य ॥ ऊऊ मानस्य ॥ अथ याय ॥ कीने । नी (थ) द
क ॥ इवा कुरु ॥ अरु ॥ वरु मूक रुव ॥ थकि सेश सथन ॥ नक विरुन ॥
अयादि वाकन ॥ ऊऊ मानस्य गृहीता धा न्थः ॥ अय क्वा म नार्थः ॥ यव नू क्वा
त्राय शीयु कि स ग्राद वो रुहा वकाय नू द अयु कि क्वा रुहा ॥ यूनन ॥ ॐ म

सिधधिसिद्धिनिमहायसिस्रदू२रुदू२स्वाहा ॥ (ध्वजवन्दन) (ध्वजयज्ञाय
वीर) (ध्वजपूषीपुमिक्कस्वाहा ॥ कथ्यत्रय ॥ दक्षधाम्नाहानथयावकु ॥ ॐ
मांत्रकगघटित वकुविद्वदक्षधनियोक्त्यामि ॥ यथा x स्तुति ॥ यनिस्रत
मस्तुही सरवकुन्दरुसतिरु ॥ शुद्धपदुकिनिरुसिदसत्तात्सकीपना ॥ अष्ट
गन्धपूषाधूपदीपयज्ञायवीरतेवयधीयनिस्रदवीमूर्धनविधिगत्सर्वेपवि
पूर्धमस्तु सयीदाववदरुवन्तु ॥ ० ॥ साहस्यपुमद्वनी ॥ अर्धपूर्ववन् ॥
वत् ॥ ॐ नुनील ॥ ग्राउर ॥ ऊऊमानस्यग्रहीतागन्धार्थं आयुक्ता

ग्राय धीसाहस्यपुमद्वनीदवीरुदावकाय ॐ दंअर्धपुनीक्कस्वाहा ॥ पूऊन ॥
ॐ अमृकवन्वव२पुवत्रविशुद्धं२रुदू२स्वाहा ॥ नीत्रवन्दन नीलयज्ञाय
यवीर नीलयूषीनिर्योक्त्यामि ह ॥ धूपकूकूम ॥ रुकिर्यवामृकवलि ॥ द
क्षधाम्नाहानथयावकु ॥ ॐ मांत्रकगघटित वकुविद्वदक्षधनियोक्त्यामि
ह ॥ यथा x ॥ द्रष्टुवधूमहाधावाकुधाम्नाहीषधी ॥ दूदानरुगसुहनीका
धवकीनमाम्मह ॥ अष्टगन्धपूषाधूपदीपः यज्ञायविकतेवयादिसाहस्यपुम
द्वीदवीमूर्धनविधिगत्सर्वेविधियनिपूर्धमस्तु ॥ ० ॥ धीमहामायवीर

वीसकभूधदत्ता ॥ पूर्ववत् ॥ ब्रह्मपूषागविनत् ॥ ऊऊमानस्यग्रहपीठाग
 न्मर्थमायकामनार्थपवसस्कात्राय श्रीमहामायवीरुघात्रकाय ॐ नमः ॥
 श्रीस्वाहा ॥ पूजा ॥ ॐ नमः कवित्वाकितिनर्कसं वक्रविष्णु कर्षय १ ॐ १ रुद्र १ स्वाः
 हा ॥ पीतवन्दन पीतयज्ञापवीत पीतपूषायतीक्ष्णस्वाहा ॥ धूप श्रीरवन्द ॥ मु
 क्तियवामृत ॥ दक्षधाडाहानिधया ब्रह्म ॥ ॐ मां वक्रवदितु ब्रह्मवक्रदक्ष
 धर्मसुतामयामिह ॥ यथा ४ ॥ माहात्म्यं नारदादवीरुघमवर्धय हाकरी मा
 यवीरुतमस्तु विद्यावाहिनमानमः ॥ नमः गन्धपूषाधूपदीपयज्ञापवीरुनेव

द्युनूत्रेष्टविधः सर्वपत्रियूर्ध्वमस्तु ॥ ० ॥ श्रीमहामन्त्रानुसाधीदवीसक ॥
 भूधविधिपूर्ववत् ॥ ब्रह्ममधिक ॥ पूठ ॥ ऊऊमानस्यग्रहपीठागन्मर्थमायका
 मनार्थपमस्तुकात्राय श्रीमन्त्रानुसाधीदवीरुघात्रकाय ॐ नमः ॥
 हा ॥ पूजा ॥ ॐ विमलवियुक्तयवल्गुमस्तु विवक्र १ ॐ १ रुद्र १ स्वाहा ॥ ब्रह्म
 नन्दन ब्रह्मयज्ञापवीत ब्रह्मपूषायतीक्ष्णस्वाहा ॥ धूप करुवी ॥ मुक्तियवामृत ॥
 ॐ मां वक्रवदितु वक्रवदक्षधर्मसुतामयामि ॥ यथा ४ ॥ वावृत्ताविधलाकि
 तिकवाहू ऊध्विधी यमत्रागमनूधदवीतमस्तु ऊगहमाहवी ॥ नमः गन्धयज्ञ

पवीत, पूषा धूप दीपने वयं नृपे धविधिः सर्वविधिपविर्धूमस्तु ॥ ० ॥ श्रीग
 नवमीद्वीसक नृपे ॥ पूर्ववत् ॥ प्रल मल । डाहा ॥ ऊऊ मानस्य गृहपीठा ध
 न्मार्थः नृपयुक्तामनार्थः पुवसेत्कात्राय श्रीगीतवतीद्वीरुद्रात्रकाय नृद नृपे
 यनीकृ स्वाहा ॥ पूजा ॥ उंरुल २ सरुल २ नृद वल विलाकि मिथं २ रुद्र २ स्वा
 हा ॥ हे श्रीगवन्दत, ह्रीनय कृपापवीत, ह्रीनय पूषा यनीकृ स्वाहा ॥ धूप नील ॥
 कुक्किपियामत ॥ नृमीव कुरु घटित विध्ववकु विद्रुद कृपा सियरा मयाम्ब ह ॥
 प x ॥ वैश्वर्यसुक निरुत्तमदत्ता वित्तक विशमां काका द्वे कृदनी हनिमस्तु दिव

सुपि १

५ चागकि, होमलेद कृपा, चागकि, कगनयात नृयत्रि १

नृपिधि ॥ नृगगनय कृपापवीत, पूषा धूप दीपने वयं श्रीगवन्दत वी नृपे धविधिः
 ये सर्वविधिपविर्धूमस्तु ॥ नृयूनित्राय मस्तु, सृषीवलदारु वस्तु ॥ ॥ ॥ ॥
 धनलिर्व, नवग्रहादि पूजा माह ॥ नृयादि ॥ उं नृदि न्याय, पूर्वो हि मूरवाय, कर्त्तृग
 द (भरुवाय, सफ म्यां जात्राय, विधमघात कृपाय, काव्यपपूणाय, कृषिय कृपा
 य, नृद्ववादि दवताय, नृदि न्यामि य न्याधि दवताय, दिवध्य गदाय, नृपय
 नृकि विद्रुप कृदस, नृमिक्त कड सरुवाय, ऊऊ मानस्य नृदि न्याय गृहपीठा धन्मार्थः
 नृयुक्तामार्थः नृद, नृदि न्याय, नृदी यनीकृ स्वाहा ॥ ॥ पूजा ॥ उं मघात्का

क्रीडुषावरीकासं सर्वत्राकाशतयद । हंसवाहनस्यैव वडवन्देनममिह ॥२॥

सामायकतिता यदवत्रामपीडा आनर्थः । वृमांशरवदक्षधः । धृततीव्रीदिया
नित्योक्तयामि ॥ काव ॥ उं नमो सामाय ॥ वागेषधिरुमलता कृधुमार्थवद्धि मेषा
दतवद्वनस्यमृगयवाय साहधकासमतः पियदर्शमिच्छा रुह्यतमाशुस
दक्षिणनूस्वेलाक । मूखगन्धपूषादि ॥ ० ॥ श्रीगवसंकनूय ॥ उं नमो
गवाय ॥ पञ्चिमाहिमूखाय सूवभूतववाय दक्षिणकाशाय पूर्वोत्तरनक्षत्राय
रागवामनाय कृषियकाशाय विष्णुपञ्चदश । श्रीगवाय द्विषियवदवताय
जूमितकूलदवताय उरुमानस्य श्रीगवयदपीडा आनर्थः नयूकामनार्थः ॥

वक्रवर्तुमहागिजी सर्वेष्टवितासनी । कृमावैकवसैस्तव वडलोर्मनमादिह ॥
दक्षिणपक्षिस्वाहा ॥ पूजा ॥ उं वक्रांकुमावाय स्वाहा ॥ वक्रवन्दनं ॥ धूप
पूजि ॥ रुकि । गवदवादा ॥ उं नमो श्रीगवाय ॥ धर्मवीर्यवृषदङ्गदा
नंदकावक मूखमूर्तिप्रसिद्धानं तवधनिययकम ॥ ३ ॥ श्रीगवायकतिता
पुंवेदेवागपीडा आनर्थः । वृमांशरवदक्षधः । धृततीव्रीदिया
नित्योक्तयामि ॥ काव ॥ उं नमो श्रीगवाय ॥ लक्ष्मीधुरयतिमंगलसूलाकसेया
दयाम्बुमधियूतिदहोम विष्णुपञ्चकदक्षिनियोडाथताहि नित्यं नमो
रुवतधवपीसूनाय । मूखगन्धपूषादि ॥ ० ॥ वृक्षसंकनूय ॥ उं वृक्षाय ॥

उक्तं त्रिपुरायाय मधुघट (भाद्रवाय द्वादसीं जात्राय चतुर्नक्षत्राय आशुय
 णमाशाय वैष्णवाशाय वृक्षाय नानायां नय विष्णुपञ्चाधिवक्त्राय (अपवि
 क्ते द (न) वलकूलदवकाय ऊऊ मानस्य वृक्षापनयदृषीता धनार्थं आयुष्का
 मार्थं ॐ देवर्षीयुक्तिस्तुत्या ॥ ॐ वृक्षाय स्वाहा ॥ धीतः ॥ धूपगन्धक ॥ कु
 कि मृग माष ॥ ॐ नमा वृक्षाय ॥ द्वितीयं गर्वमुहमवीर्यस्य विरुतस्य च (न
 कपय रूलं तस्य कवक्षान्तिप्रयक्रम ॥ ऊ वृक्षापकानिना यदववागपीता
 धनार्थं ॥ ॐ मां वृक्षाय विनमः सुवर्णदक्षध धीतमर्षय वीर्यावन्तिर्योक्तया

पीतवर्णमरुकांती सर्वो विष्णुविनासनी यमासनी कृते सोम्य वृक्षवर्द्धनमा
 मिह ॥ १ ॥
 मि ॥ ॐ नमा वृक्षाय ॥ उक्तं फवावृकनकाकूलवर्धकाय ॥ धनकयसससुरु
 वाविददतमासुहृतादि (ध) यदत सर्वे ऊ गती विपकि कुन्यातयारुवसूक्ष्म
 कियसन्ते ॥ अथ ॥ ० ॥ वृहस्पतिस्तु कर्णधे ॥ ॐ नमा वृहस्पते ॥ वि
 धाता हिमुरवाय निम्ब (भाद्रवाय चकादसीं जात्राय उक्तं वरुणं धीकृताय
 अंगमत्रसाणमाशाय वृक्षादिदवकाय वृहस्पतये (मेरुमसपि विष्णुपञ्चकंद (भा
 न्यदवकाय वलकूलदवकाय ऊऊ मानस्य यदृषीता धनार्थं आयुष्का मा
 र्थं ॐ देवर्षीयुक्तिस्तुत्या ॥ पूजा ॥ उक्तां गमसादाय नमस्तु

श्वरचन्द्र

हा ॥ पीतचन्द्रनायडा ॥ दृक्मधूधूपनिमन्त्रयामि ॥ इन्द्रविडा ॥ उं
नमावदस्य ॥ पीतवर्णयुगीयस्मात्वासुदवस्यवत्तुं यदाततस्मिन्विष्णु
कवक्षान्तिययम् ॥ उं ॥ मे ॥ वरुणाय उतितापदव ॥ वागीशान्तर्य
॥ ॐ मा ॥ पीतवर्णयुग ॥ सुवर्णदक्षाय वीहिपात्र निर्योक्तयामि ॥ ॐ ॥
उं नमावदस्य ॥ सत्यालिकाकवर्णपूटदववाङ् ॥ युगमधिष्ठाति विवाङ्
नपाधिष्ठाति ॥ वावषातसक्तमस्तु नमस्तु कव ॥ आयु शिर्यङ् नयङ् तन्मि
न्दपूषे ॥ अङ्ग ॥ ० ॥ शुक्रसक अर्थ ॥ उं नमा शुक्राय ॥ पवि
रक्तकवितवस्मिन् ॥ दववाषदितासर्त ॥ सर्वदवपुत्रार्थं वावस्यति नमामि

४ ॥ उं ॥ शुक्राय नमः स्वाहा ॥ ४

साहिमूखाय ॥ रागवाङ्वाय ॥ नवमांकाय ॥ पूषतक्षाय ॥ रावर्गण
नाय ॥ वृक्षकाय ॥ शुक्राय ॥ वक्राधिष्ठिताय ॥ वेवायनकलाववाय ॥ शुक्र
वासुक्रयक्षाय ॥ उं ॥ मानस ॥ शुक्राय दायनं पीताभं नय ॥ आयु
कामार्थ ॥ ॐ ॥ उं ॥ अर्थ ॥ पतिक् स्वाहा ॥ ॥ श्वरचन्द्रनमः ॥ दयधूप ॥ श्रीवडा ॥
उं नमा शुक्राय ॥ विष्णुं मध्वपत ॥ यस्मान्ममकर्मरुत ॥ चन्द्रार्कवाहनातिन्य
कवक्षान्तिययम् ॥ उं ॥ शुक्राय उतितापदव ॥ वागीशान्तर्य ॥ ॐ मां ॥ ॥
॥ वरुणाय कलाववीहिपात्र निर्योक्तयामि ॥ ॐ ॥ नमा शुक्राय ॥ दयधूप

श्रीरव ४४

असुत्रानां नदी इति । तत्रैव महाकाल । सर्वविद्यापदांता न बडा । तन्म

व. स. र. व. वा. वि. क. पा. द. प. द. । आ. म्ना. धु. वा. व. क. त. । ध. व. स. मा. न. ता. क. । उ. का. य. स. सु. द. ।
वि. क. न्द. स. व. धु. का. न. । उ. हं. त. मा. मु. द. द. रा. वि. स. र. व. त. ना. धा. । अ. सु. ग. म्ना. X ॥ ० ॥
ध. ति. च. त्र. स. म्ना. य. ॥ उं. त. मा. ध. ति. ध. वा. य. ॥ द. क्षि. धा. हि. म्ना. वा. य. । धी. वा. श. रु. वा. य. ।
उ. सु. मा. डा. वा. य. । वा. हि. धी. त. रु. वा. य. । का. ध. य. ग. म्ना. य. । गू. ड. डा. वा. य. । ग. म्ना. यि. नि.
कु. द. । ध. य. डा. य. नि. द. व. ना. य. । अ. क्षा. ल. व. कू. ली. रु. वा. य. । ह. रि. क. वा. स. ह. रि. क. य.
हा. य. वी. य. । उ. ड. मा. न. स. ध. ति. च. त्र. य. हा. य. न. पी. का. धा. म्ना. य. । अ. व. द. धा.
ते. ध. वा. य. । म्ना. य. नि. क. सा. हा. ॥ उं. क. रु. व. धु. य. सा. हा. ॥ ध. म. स. व. न्द. न. X ॥

XXXXX

अ. म. क. र. १	३३५	I
---------------	-----	---

क. रु. १

इवाय. सफर्यां जावाय. अष्टावतनकृताय. सादकावाय. विरुगुकादिद
 वताय. अमायकृताइवाय. मघि/मताय. मयूणीकृत्त।ग. वक्तयशा
 दिदवताय. विरिगुयूषाविदिगुवासाय. विरिगुयूषापीताय. ऊ. ४. क
 गुयद्ववातातपीतामार्थ. आयूकामार्थ. ००. दीककमार्थ. पुकिकृत्ता
 दा ॥ ३. अमिककवसादा ॥ विदिगुयूषादियूडा ॥ सिद्धासधूप ॥ मुकिरव
 तम।ध ॥ दकध ॥ ३. तमाककव. कृगुत्तं सर्वयूता. मीगवास्तववस्ति
 लामर. ३३. कीव. मुगुनी १

गान्तर्विहारासातिगंतवशक्तिप्रयत्नम् ॥ ३४ ॥ कक्षापङ्क्तिरसर्वोपय
 वशागपीकांशं हर्षम् । नूमात्रकयष्टिकयुक्तिविम्बगदक्षधकूलधृवीदि
 पावनियोगयामि ॥ ३५ ॥ कुंतमाकनवलाकधुहाधुहविषमपवीद्विधी
 या, लिंगयदनेयकियः लमसियसन्नकना, न्नकनः ३ः रविनासकापी ३
 लाङ्गगकिर्नसूर्यकचूततमासु ॥ ३६ ॥ ० ॥ उत्तमसूचि ॥ कुंतमा
 उत्तमवकाय ॥ विषादतकूटवकाय, सूर्यासनापस्विताय, शुक्रवासपूषा
 मन्त्रमहाशोईवाधुनमसधविर्न । सर्वविघ्नविहर्तृवज्रकटुनमामि ह ॥

धूपदीपयज्ञकणियाय दत्तदानवगन्धर्वकम्पाद्युगाकित्यनन्तरसहिताय
 वक्रवर्गुगवत्तुदानपरुहिनाथाय ॐ देवदहमधुलमध्वरनूपविद्य ॐ दि
 ग्जगन्धर्वयज्ञः धूपदीपाय दत्तवर्तिनः यकिगृह्णतमासुयस्यकीयककः
 पीतिकराहवधमनियुष्टिकुरुत्माय अर्घ्ययकिस्वाहा ॥ ॐ ऊत्मानस्वाहा ॥
 श्रीरवधु स्वकवन्दादियूजा ॥ कयत्रधूप ॥ रुकिध्वजिजा ॥ ॐ ऊत्माय नमो ॥ यस्मा
 दसूतासंपन्नं कसवस्यनिवस्य । सकामध्वसूतास्यदत्ता ऊत्मानिऊत्मानि ॥

ॐ ॥ २

ऊ ॥ ऊत्माय ऊत्तिकः सवापदवत्रागपीठासंमर्थ ॐ मां ॥ अथोदकधाम्
 द्वाकवीहिपाठसंप्रदाययामि ॥ सु ॥ ॐ नमो ऊत्माय ॥ ऊत्तकर्मरुल
 देयुदोदेकितिन्यमादिभ्यका दयनवयदददधर्कः लाकसदासुवियूलम
 वभापकात्रि रुक्मानमामिनित्रसारवपादयमि ॥ अथ गन्धयज्ञपवीतयूषध
 पदीपनेत्रयऊत्तदवताय अर्चनविधिसर्वविधियत्रियुधुमसु अथान्नाया
 तयमसु सूपीतिदावत्रदारुवत् ॥ ॐ ॥ ॐ किमवयददधर्कः अर्चविधिसमा
 रुक्मानवदसंकासी सर्वदवतमरुकी । सर्वयऊत्तकात्रव ऊत्तदवत
 मसंकासी ॥

सात्रवति. ज्ञानं स्वस्वमुज्जमानस्यदिग्विदिहस्वाहा ॥ विदिगस ॥ यद
वलि ॥ ॐ नमो यमवदूच. कूठनेनुष्मागितेनमन्वायूच. धमविहीवलि
यद्वादेवेवायनाः सपत्नीकाः सपत्निवाः ॥ ॐ नमो सदवीदवनावाः सापायाः सप
त्रितावाः सपत्नीकाः सपत्नीकाः सपत्निवाः ॥ ॐ नमो सपत्नीकाः सपत्नीकाः
यात्रमनीय. यथायथा दीपंगमनेवयावलि वदास्यामि. संपीत्या गृह्णतुकि
षतुमुज्जुवातनु पिबतु द्रव्यं कृत्वा. मम सर्वसत्त्वानां वायुं च न वधुमात्रा

ग्यंभक्तिपूष्टिप्रतिपत्तिवददध्वं. सर्वदा ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥
॥ दिग्वावलि ॥ यत्तल्लिर्वयं च न कावलि ॥ ॐ महायकिसत्रमहाविद्यावाहनी.
सर्वविद्याधिपतय. ॐ नमो वलिगृह्ण ॥ मम सर्वसत्त्वानां वधुमात्रा ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥
कपिष्ठा वापस्मावादी. मात्रयश्मदेयश्च ऊजयश्च मांसं च सत्त्वाश्च न कृ ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥
॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥
वात्रतिममसर्वसत्त्वानां वधुमात्रा ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥ ॐ नमो वदध्वं ॥

वैश्वदेवसूत्रगन्तुकिन्तमहावगुरुयुक्तपिम्भवादीनृहन्तश्चददशपञ्चमथश्च
विधाययश्महासाहस्यमर्देवि००० देवलिगृह्णश्ममसर्वसत्त्वानां वरुणश्च०००
रुतुश्च००० ॥ साहस्यमर्देति वलि ॥ ॐ महासायूत्रीमहाविद्यावाहीसर्ववि
षयसमन्तिममसर्वसत्त्वानां वरुणश्च००० कुरुयुक्तिं कुरुवर्णं कुरु सर्वदेवतागयक
गन्तुवैश्वदेवसूत्रगन्तुकिन्तमहावायूयुदवानृहन्तश्चपञ्चदेहश्चमात्रयश्च
ऊयश्चऊयश्च००० देवलिगृह्णश्ममसर्वसत्त्वानां वरुणश्च००० रुतुश्च००० ॥ म

हासायूत्रीवलि ॥ ॐ महासन्तानसावित्री००० यदवतासन्ति००० देवलिगृह्णश्म
ममसर्वसत्त्वानां वरुणश्च००० कुरुयुक्तिं कुरुवर्णं कुरु सर्वदेवतागयक
वर्णयश्चऊयश्च००० रुतुश्च००० ॥ मन्तानां वरुणश्च००० देवलि ॥ ॐ महावीरवती
सर्वदेवतामर्देनाममसर्वसत्त्वानां वरुणश्च००० कुरुयुक्तिं कुरु सर्वदेवतागयक
त्रयश्चकात्रयश्चऊयश्चऊयश्च००० देवलिगृह्णश्ममसर्वसत्त्वानां वरुणश्च००० रुतुश्च००० ॥
॥ महावीरवती ॥ ॥ ॐ आहूँ आदिह्यसामर्णमवधवदस्यतिष्ठु

भतिष्ठत्र वाङ्मयः सयनीकृतः सयत्रिवाङ्मयः ॥ द्रवलिगायावमना
 येषां धर्मदीर्घवर्तिवदास्यामि सयीमागृह्णन् दिव्यनुरादनुषिबन्तु
 दक्षरुत्वादातपसः सर्वस्वानायायवत्तवधुमात्राग्यं भक्तियुक्तिधृति
 पीतिवददध्वं सर्वदाहं १२ १२ वरुध्वन्माहूपयति स्वाहा ॥ यद्वलि
 श्वनलिव ॥ महावलिविय ॥ वल्योचनहय ॥ दगुत्रिवलिविय ॥ परि
 वापूजा ॥ नवयदस्वानतनके ॥ ॥ रुक्मानमासुनसूनयदयुजिय

॥ मन्त्रिय ३
 सकयकाम

सखयायवध्वन्माहूपयति स्वाहा ॥ यद्वलि
 यगुत्रवसन्नदीगताहमि ॥ यद्वलि ॥ यननिगुयतिथा ॥ यद्वमधुवदन
 कविमज्जन ॥ नमः ॥ स ॥ वसुदिहय ॥ सरल ॥ यद्विर्वस्वानत
 नके ॥ यथसमाफयाय ॥ यथियूजा ॥ दवद्वद्वद्वद्वययथसाहा ॥
 यद्वयूजा ॥ दवद्व ॥ रुमापन ॥ कलललल ॥ सुयन ॥ य ॥ मागीवा
 विय ॥ कथन ॥ यनलिव ॥ यद्वदीविद्वकाय ॥ यनसमयावकहय ॥

धनलिर्विशुद्धदानकाय ॥ भूषादिवाक्कत ॥ ऊऊमानस्यसुखोविशेषः ॥
 सद्वापदवामाचनस्वात्रागुपमंहीन्मायूत्रात्राग्यकामार्थं ॥ मीत्रऊऊदधिक
 वृकुविद्रुदक्षिधुर्लुमर्दस्यदद ॥ ॥ धनलिर्विशुद्धमायन ॥ कलशसमधु
 लपालवद्रुकाय ॥ त्रेण्यथिन्नवद्रुकाय ॥ महावलिक्काय ॥ दयुवलिदिगवलि
 दिगसक्काय ॥ त्रऊयगायपूऊसुहृस्वसक्काय ॥ ६ ॥ ग्रहवलि ॥ कूकूत्रावलि ॥
 गद्रुमनपिथिसक्काय ॥ ग्राहवलि ॥ रुऊनसक्काय ॥ मूत्रवलि ॥ यिन्नकावलि ॥
 यत्रजा ॥ धनस ॥ धनधूनकाव ॥ धानत्रैकागाय ॥ धनलि ॥ यथसिहवर्ध

५ अक्षमातत्र काविय ५

[illegible]

वज्रा २

१ गुरु मलन सये उ यदन अति र्थः

पिवन्तु यदं ॥ ॐ दैवकर्मैस्सकृन्नुग
 लु ॥ ॐ ब्रह्मवद्विसेरुदवसद्य
 ॐ दैवलिंगं कुरु मवि सिर । अग्नि
 यमो नममय रूपमिव आर्षय किवा
 यप्रना विषय ॥ ॐ ॥ रुतप्रिय
 किथदवा सुदृष्टय द्यो कृ पितामः
 दवा । दवा समन्ता दुविशय नाग
 यना प्रना गुक्क गन समन्ता ॥ ॥
 युक्तिपुनित्य कनिवदनं लु स्वकस्व
 कास्ववदिष्ण सुदृष्टं । गृह्णन्तु ह्यस
 वनासंसे न्या । सफुल्ल मिश्र सुकुनस
 मन्ता ॥ ॥ प्रयवसिपृषीव निनेवय
 य ॥ कुङ्कुलु डिद्यु लु यदं । ॐ दैवक
 र्मैस्सकृन्नुग लु । न कवृ क्क म्म
 नवा ॥ ॥ पवनैर्कदम्ब गृह्णन्तु ममवा
 ल्वेप पथे कृणु । सुन्या मय विनाष
 न ॥ रुङ्कनं लु ल गन सु म्या ॥ ॥
 मार्गमो रु विनाष न । कृणु नुदमना
 वद । दवदक स मा शुन । कृणु कना
 लेही रु स न नुमी य विनाय का ॥ ॥

रतमः षीवदसत्याय ॥ ॥

उत्सृज्यवलिपूजासाह ॥ ॥

पुष्टस्त्रयीविय गुनमधुन दगु

नीधनदाव ॥ उत्सृज्यवलिपूजा ॥

धय ॥ आप ॥ उत्सृज्यवदुद्धासंघ

धमा ॥ उत्सृज्यदवतात्मानरा

वशत ॥ पात्रादि पृथग्याग ॥

उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

लवायसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

हा ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

भावाहनीयसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

पूक गिय साह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

लीय साह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

लीय साह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

साह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

मुक्ति ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

घात ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

किं कृ प्रियसं यूक ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

सायनभी मुक्ति ॥ वलि ॥

उत्सृज्यवलिपूजासाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

ली ॥ महाभावाहनीय ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

द्विज ॥ समग्रद ॥ काविकनी

दिना ॥ सुगायकसि ॥ महा

पूकसि ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

य ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

नी ॥ महाकागी ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

यकि ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

समयवलि ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

दसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

समय ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

य ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

कृकलियूजायाय ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

निहाथपूजा ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

कोक ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

धनका ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

नी ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

अग्निका ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह ॥ उत्सृज्यसाह

विय ॥ यूष्मे ॥ उँ दि न धव ध्मे ॥
 सगुन नय क ॥ स रं अल धियु कि
 स्था ॥ आ दी वी द ॥ स रखा क्रु कि ॥
 ना जा द दाय ड मान द क्ष पा टि
 द क्ष व नि क्षा नि क पू रि क य व क्ष
 न्या दि व रि कि का क्ष म या य ध्वि रु
 क्ष म य् ध्मे र्न् का न य क् क्ष धि क
 म द ॥ आ रं सा स्ता ॥ य रू वि स
 ऊ र्न् ॥ ऊ ऊ मा ना रि क्ष का डी वी
 द क्ष को मा ली यू डा ॥ क्षा य लि दा
 व न द्वा व व न्द ना दि भा द नि स रु
 द स स्था न का य ॥ स म य का य ॥
 श क् क लं क र्न् ॥ ॥ ॥
 कि ग् द यु कि स्था वि धि र्न् यू र्न्
 ॥ ॥ ॥ उँ न म ष्ठी व ड् स स्वा य ॥
 द वा स ना स रं व रू र्न् ग मि द्वा ना क्षा स
 व रू १ क ट पू र ना ध्व ॥ ग न्ध र्वे य क्ता
 ग रू ऊ न य ष्व श क वि रू मो ति व
 स नि द व्या षा ॥ ॥ न ष् क क्ता न १ पृ
 षि षी क र्न् र्न् द क्ष मा ष् र्न् लि वि रू प

यामि मा स्तु । स पृ ष्ठा न १ ४ स र ह ह्मे र्न्
 ध ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 य म न य् र्न् नि व स कि रू ना १ ४ य न न्द
 न य च स्त ना न ध ष् ॥ य या द या रु न
 वि म लि न य् न न न क ष् स र्वे ष्व अ व
 स कि ॥ ॥ स नि रू स र्वा नु च र्न् ग म ष्
 न ता ल य या पि क्ता नि चि वा सा । वा पि
 क दा ग ष् च प त्वे व ष् ॥ क ष ष्व य ष
 च नि ष न ष ॥ ॥ य म न या ष ष्व य क्ता
 न न ष् ॥ सु ना ल य द व गृ ष ष्व य च ।
 वी क्षा न य य या व स थ म ष् मि र्न्
 वा ना नु च क् ऊ र्न् य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अ नि रू गृ ष्ठा व स कि न थ म् स वि धि
 स र्व य त्वे न ष । अ क क क् र्न् म क्ता
 प थ ष् ॥ म हा ष् म् य न ष ॥ ॥ सि र्न्
 रू क्षा धृ कि ना स य च व स कि यो ना स
 म हा न वी ष । धी प ष् धी य ष् क्ता ल जा
 च ॥ म नो ष म् य न ष व स कि य च ॥ ॥
 द क्षा य स ना स र्न् क्ष मा र्न् यी ध्वि व नि
 क्षि ष वि धि थ रू क्ता । ग रू क्ता रु ड्

शिवथासिमा ॥ गमीधमर्न ॥ मरुगम
सि ॥ डं अघिना गेडसा ॥ यागका
गि ॥ डं यागयाग ॥ नागघनास्वि ॥
डं स्वधा ॥ दुहुकादिधम ॥ डं
नभावतु धमय ॥ असिर्नागादिमव
नासि ॥ डं नमरुनूड ॥ शिवनावा ॥
डं शिवास्तु ॥ शक्तिमर्गमी ॥ डं
शीनामदात्रा ॥ यागिनीरुध ॥ डं
दवतीर्यमनामरु ॥ शिवशक्ति
व्यथि ॥ डं दधमर्न ॥ वायुदासा ॥ डं
नववायु ॥ यक्रु ॥ डं अनेन
क्रा ॥ यक्रुधीकानु ॥ डं युधायक्रु ॥
यक्रादिगधत्वाक ॥ डं वर्गकधर ॥
धर्मनात्रवा ॥ डं वर्गनदीक्रा ॥ अ
धर्मनाल ॥ डं वृदुस्यक्रु दिगसि ॥
वन्धजतुधन ॥ डं वनूधसांरु
रुर्न ॥ निमोलवधुवसा ॥ डं अ
क्रुन्कर्म ॥ डं नूटुक्रायधीर्वनाक्रु ॥
डं गुणानमिन्दु ॥ अग्निमादधरो

र्यकूलि ॥ डं अग्निस्मृद्धो ॥ यमका
मात्रीयना ॥ डं यमनदरु ॥ नमृम
वेक्रुवीयाकूलि ॥ डं यक्रुधवी ॥ व
नूधवात्रासि यागा ॥ डं मभव
नूध ॥ वायव्यं डं नूधाधीर्यकूलि ॥ डं
नववायु ॥ कूवत्रवामदुधयना ॥ डं
कूविदग ॥ डं धनमहालक्ष्मीव
कूलि ॥ डं गमीधमर्न ॥ कूमात्रायि
त्रिस्तुग ॥ डं यदकन्द ॥ गधथाकूनि
स्तुग ॥ डं मनाम ॥ यागिनीर्यकूलि
स्तुग ॥ डं वसुधम ॥ कूवर्वकूलि
स्तुग ॥ डं ययर्थपथि ॥ यागालक्रु
लि ॥ डं मभवन्ध ॥ मरुमधु
लुगल ॥ डं याकापरन ॥ स्वमेद
मद ॥ डं यावापथिवी ॥ धनर्नम
लंक्रुयादाक ॥ डं वर्गचनपावा
न ॥ वक्राधमदाधुदिग ॥ डं युश्री
दिधसादा ॥ धर्ममादुकिनिविश
वः ॥ लक्ष्मीयार्गयधमर्न ॥ कूक्रु

वृक्षम् ॥ क्षासखाया ॥ ॐ नमो भगवते
 दा ॥ यवसुखका ॥ ॐ त्वं जविषदा
 ॥ क्षासितकचानकाया ॥ ॐ ॥
 कादनी ॥ ॐ मम ॥ ॐ मानकाका
 नकासका ॥ ॐ ॐ मानाया ॥ चन
 सिधुऊऊम न्दवानस्वानन ॥ थ
 कद्वानयूजा ॥ थसिमानिनालद्वान
 युनिमात ॥ गलकावस्त्रिलदान
 ॥ कयादवयानगादकिविय ॥
 वृक्षाधीपु ॥ ॐ वृक्षयस्तन ॥
 मादधनीमद्यराह ॥ ॐ द्विधानामा
 सि ॥ कामानीलदा ॥ ॐ यगवा
 दा ॥ वृक्षविलदामा ॥ ॐ विष्णुन
 राट ॥ वानादितुसि ॥ ॐ यस्य दूमो
 ॥ कनिवालादीवद ॥ ॐ दधिड
 कगन ॥ ॐ ॐ दवी ॥ वामदास्व
 धया ॥ ॐ जागवदस ॥ मदास्तनी
 लक्षधनया ॥ ॐ दिलधवधु ॥ धि
 वदकिस्वाया ॥ ॐ सिधानामाहि ॥

हेतवहेलवीस्वागुप्त ॥ ॐ नमो भगवते
 ना ॥ हेतवस्वत ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 लक्षीस्वसि ॥ नमो भगवते ॥ ॐ ॐ
 धीकधस्वटका ॥ ॐ नीलगीवाधिनिक
 द्वा ॥ ॐ गवनिधिविद ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 यववकुनदा ॥ जिधुल ॥ ॐ सधाजा
 ना ॥ चन्द्रस्वयंकावस्वतल ॥ ॐ वन्द
 मामनसाकाम ॥ गंगादिगुनिनिपति
 वान ॥ ॐ ॐ ममिग ॥ ॐ मानस्वडव
 ॐ ॐ यदकन्द ॥ ॐ नायका ॥ ॐ ॐ
 ॐ ॐ गव ॥ ॐ स्वदराग ॥ ॐ नमा
 कुसयोथा ॥ ॐ गवनिकात्राग ॥ ॐ स
 मस्वदवा ॥ सप्तमसिस्वादान ॥ ॐ स
 फसुषय ॥ वृक्षाविष्णुमदधननिवा
 स्वाग्ना ॥ ॐ न्नातुकन ॥ यववकु
 यथाषात्र ॥ ॐ न्निहाधन ॥ वनीध
 यागिनी ॐ स्वत्वास्त्र ॥ ॐ ॐ मान ॥
 वृक्षाकवचनकु ॥ ॐ वृक्षयस्तन ॥
 विष्णुस्वववत्रकु ॥ ॐ ॐ ॐ विष्णु

गुह्यगिह्यादिधिमाह॥

नकधरुगवलियाक॥ विया
वसकलेहिनेवास्वादावत
लिसेतयाववावक॥ अयाव
ग्रामादुधुधर्ग्यकानग्राव
वगुनुधुधु॥ रुमिसुधुगुसोव
क॥ यणुलयावविधुगु॥
थकधुनदाववा॥ एरुगवाध
धने॥ यीवगवाठिरुग॥ ऊऊ
मानयार्गविय॥ गिरुहा॥ य
धविष्माननागिनकार्यकत्वा
क॥ नधमवेन॥ धृनादुगि॥ गि
लोक्रुतिरुधुर्ककत्वा॥
कनायधकर्मसमययधकर्म
कालय॥ स्वकिकनाय॥ ककन
कयावकटातसकसकनकयाव
निर्मिच्छने॥ मकुरुनात्रवासगु
दययैकनीत्वादाव॥ कृदकन
सस्त्रानयाथ॥ यीवामृक॥ यीव

गव्यनसस्त्रानयाय॥ थयव
गव्यनसकहिनेदाय॥ गन
धकथमगिदाय॥ यीवस्त्रन
धकनयाय॥ दवदधक्रियाथ
दधक्रियायाय॥ साधनयाय॥
धिनत्व॥ यीवगत्वा॥ मउधन॥
न्यासनसाधन॥ ॥ वटसिय
जायोचक॥ दाय॥ कृदवल
वियक॥ धनवन्दकादुनिनि
वाकुरुनिनिगयक॥ स्वासग
कोदखत्रक्रियागसगभययीव
रुगकानकायुकाभूकनका
कुस्त्रानग्यामार्गेनकृदस्थ
भायूवकायाठसथाउधयाव
रुसिगकवाखाय॥ नकिलिना
य॥ मसियुदाय॥ धनानतुधने
दाय॥ ईदवस्यत्वा॥ यीवगव्यन
दाय॥ ईयविरुक्ता॥ नकिलिना
य॥ ईनमकनय॥ रुहु॥ ईय